International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 10-08-2023, Accepted: 27-08-2023, Published: 11-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 14-15

सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व के अनुरूप है, स्टेच्यु ऑफ यूनिटी

सपना दुवोलिया[1], विभा दुर्वार[2]

[1] शोधकर्ता, लोकप्रशासन एवं राजनीति शास्त्र विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई कला वं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, राजनीति विज्ञान विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई कला वं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
देश की एकता के निर्माण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का सबसे बड़ा कार्य माना जाता है, जिस प्रकार तीव्रगति से और उचित निर्णय लेकर उन्होंने देश को संभाला, वह आने वाले सैकड़ों वर्षों तक भारतीयों को मार्गदर्शन करता रहेगा। सरदार पटेल की कार्यशैली वेबाक थी। उनमें निषि क्रयता और विवशता को कोई स्थान नही था। समाज और देश के लिए कार्य करने वाले या ऐसा करने की इच्छा रखने वाले उनकी कार्यशैली और निर्णय–क्षमता से मार्गदर्शन लेकर आगे बड़े तो उनके श्रेष्ठ और सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे। देश की एकता, अखण्डता और उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता। सरदार वल्लभ भाई पटेल के दृढ़, त्वरित निर्णय लिये। उन्हीं निर्णयों के आधार पर भारत का भाग्य बना और वह उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ सका। 'भारत के लौहपुरूष' सरदार वल्लभ भाई पटेल को समर्पित स्टैच्यु ऑफ यूनिटी के निर्माण के साथ ही भारत ने दुनियाँ की सबसे ऊँची मूर्तियों के क्लब में प्रवेश कर लिया है।

मूल शब्दः सरदार वल्लभ भाई पटेल, स्टैच्यु ऑफ यूनिटी, सरदार पटेल की कार्यशैली

राष्ट्र को समृद्ध, शक्तिशाली बनाने के सपनो को पूरा करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति वाला नेतृत्व, जिसका जीवन देश के लिए हो, ऐसे व्यक्तित्व के धनी राष्ट्र नायक आवश्यक है। देश के महान भविष्य के लिए जिसके सपने हो और जो देशहित में कड़े निर्णय लेने में सक्षम हो, इतिहास में ऐसे महापुरूष अवतरित हुए जिसके कारण भारत आज जीवंत अवस्था में है। कई थपेडो के बाद भी हम उठ खड़े हुए है। ऐसे समय हमारे सामने लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल का प्रेरणादायी व्यक्तित्व उभरता है। आजादी के बाद केवल तीन वर्ष चार माह वे जीवित रहे, लेकिन इतने अल्पकाल में ही उन्होंने रियासतों के मकड़जाल में से बाहर निकलकर भारत को एकात्म स्वरूप प्रदान किया। पहले उप–प्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने पूरी शक्ति का उपयोग करते हुए देश की छोटी–बड़ी रियासतों को भारतीय संघ में विलीन कराया।

हैदराबाद नबाव की स्टेट समृद्ध और शक्तिशाली मानी जाती थी। वहां भारत की अखंडता के लिए सत्याग्रह वाले आर्य समाजियों और मुस्लिम परस्त नीतियों के कारण हिन्दुओं पर दमन चक्र चला। हैदराबाद नवाव को सबक सिखाने के लिए सरदार पटेल ने बिना प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू की अनुमति के हैदराबाद में सैनिक कार्यवाही की इसके बाद घबराकर नबाव ने भारत के विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। जूनागढ़ के नबाव ने भी थोड़े नखरे दिखाये और बाद में पाकिस्तान भाग गया। विश्व के इतिहास में शायद ही सरदार पटेल जैसा साहसी नेतृत्व हुआ हो जिसने इतने कम समय में 562 छोटी बड़ी रियासतों का एकीकरण करने का साहस किया हो। इनकी दृढ़ इच्छा शक्ति एक ओर घटना है। सरदार पटेल ने सुना कि बस्तर की रियासत में कच्चे सोने का बड़ा क्षेत्र है। इस भूमि को दीर्घकालीन पट्टे पर हैदराबाद का नवाव खरीदना चाहता है। सरदार पटेल विचलित हुए क्योंकि उनके सामने भारत के महान भविष्य की चिंता थी, उन्होंने अपना थैला उठाया, वी.पी. मेनन को साथ लिया और चल पड़े। बस्तर पहुॅचकर उन्होंने 23 राजाओं से कहा कि कुए के मेंढ़क मत बनो, महासागर में आजाओ।

एक ओर रोचक घटना है। फरीदकोट के राजा ने आना कानी की, सरदार पटेल ने फरीदकोट के नक्शे पर लाल पेंसिल घुमाते हुए केवल इतना कहा कि क्या मर्जी है, राजा कांप उठा।

15 अगस्त, 1947 तक केवल तीन रियासतों कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद को छोड़ इस लौहपुरूष ने सभी रियासतों को भारत में मिला लिया, और बाद में दैहराबाद को ही सैन्य कार्यवाही से और जूनागढ़ को ऑख दिखाने से ही उसका भारत में विलय हो गया। जहॉ तक कश्मीर का सवाल था उसे पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने अधिकार में रखा। सरदार पटेल कश्मीर जूनागढ़ संग्रह तथा इस मामले को संयुक्त राष्ट्र मे ले जाने पर बेहद आक्रोशित थे। पं. नेहरू ने उस समय जो कश्मीर के बारे में राष्ट्रघाती गलती की, उसी का परिणाम कश्मीर समस्या का संकट और आतंकवाद से जुड़ा रहा है। काश कश्मीर का मामला सरदार पटेल के पास होता। विडंबना यह रही कि लचीली और भ्रमित नीतियों के वाहक पंडित नेहरू की बजाय यदि प्रधानमंत्री सरदार पटेल होते तो भारत का अखण्ड स्वरूप कुछ और ही होता।

स्रदार पटेल के बारे में कई विद्वानों का मत था कि विस्मार्क की तरह थे। लेकिन उनके बारें में लन्दन टाइम्स में लिखा था कि विस्मार्क की सफलता सरदार पटेल के सामने महत्वहीन हो जाती है यदि सरदार पटेल के कहने पर चलते तो कश्मीर, चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे नही होते। सरदार पटेल सही मायने में मनु के शासन की संकल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नही बल्कि भारत के हृदय सम्राट थे। जिनके व्यक्तित्व में चाणक्य और शिवाजी की दृष्टि थी, सरदार पटेल का नेतृत्व भारत को कुछ समय और मिला होता तो आज भारत का मानचित्र कुछ और ही होता। ऐसे महापुरूष की स्मृति को स्थायी रखने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नर्मदा के तट पर विशाल प्रतिमा के निर्माण का संकल्प सरदार पटेल के जन्मदिन 31 अक्टूबर, 2013 को लिया, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे। सरदार पटेल के जन्मदिन पर ही इस महान और पेरक कार्य का शुभांरभ हुआ। यह स्मारक सरदार सरोवर बांध से 3.2 किलोमीटर दूरी पर साधू बेट नामक स्थान पर है जो नर्मदा नदी पर एक टापू है। यह विश्व की सबसे ऊॅची प्रतिमा है जिसकी ऊॅचाई 182 मीटर (597 फीट) है।

सरदार पटेल की दुनिया की सबसे ऊॅची प्रतिमा बनाने के लिए लोहा खेती के काम आने वाले पुराने और बेकार हो चुके औजारों

से जुटाया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय एकता ट्रस्ट से पॉच लाख किसानों से लोहा जुटाने का लक्ष्य रखा। इस अभियान को स्टेच्यु ऑफ यूनिटि नाम दिया। पॉच हजार मेट्रिक टन लोहे का संग्रह कर करीब छः लाख ग्रामीणों ने सरदार पटेल की विशाल प्रतिमा के लिये लोहा दान किया। प्रतिमा निर्माण अभियान मे सुराज प्रार्थना पत्र बना, जिससे जनता बेहतर शासन की राय लिख सकती थी। सुराज प्रार्थना पत्र दो करोड़ लोगों ने हस्ताक्षर किये, जो विश्व का सबसे बड़ा प्रार्थना पत्र बन गया। 15 दिसम्बर, 2013 को रन फॉर यूनिटी मैराथन का पूरे भारत में आयोजन हुआ। विश्व की सबसे ऊॅची सरदार पटेल की प्रतिमा इस्पात सांचे, प्रबलित काक्रीट तथा कांस्य लेपन से युक्त है। स्मारक तक पहुॅचने के लिए लिफ्ट, मूर्ति का त्रिस्तरीय आधार जिसमें प्रदर्शनी फ्लोर, छज्जा और छत शामिल है। छत पर स्मारक उपवन, विशाल संग्रहालय तथा प्रदर्शनी हॉल है, जिसमें सरदार पटेल के जीवन प्रसंग तथा योगदानों को दर्शाया गया है। नदी में 500 फीट ऊॅचा आब्जेवर डेक का भी निर्माण किया गया। जिसमें एक ही समय में दो सौ लोग प्रतिमा का अवलोकन कर सकेंगे। एक आधुनिक पब्लिक प्लाजा बना है जिसमें नर्मदा नदी और प्रतिमा देखी जा सकती है। खान–पान स्टॉल, उपहार की दुकाने, रिटेल और अन्य सुविधाऍ शामिल है। इस विश्व की सबसे ऊॅची प्रतिमा का आकर्षण भारत ही नही बल्कि विदेश में बसे ना केवल भारतीय बल्कि विदेशी भी इसका अवलोकन करने आयेगें। 2989 करोड़ की लागत से इसका निर्माण कार्य लगभग चार वर्ष में पूर्ण हुआ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन 31 अक्टूबर 2018 को सरदार पटेल की दुनिया की सबसे ऊॅची प्रतिमा 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' का अनावरण किया। सरदार पटेल के जीवंत व्यक्तित्व के दर्शन इस प्रतिमा को देखकर होते है। सरदार पटेल की लौह इच्छा शक्ति से आज भारत का एकात्म स्वरूप दिखाई देता है। जिस तरह हम कहते है काश पं. नेहरू के स्थान पर सरदार पटेल प्रधानमंत्री होते तो भारत को कश्मीर आतंकवाद की समस्याओं से नही जूझना पड़ता। यदि सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होते तो आज भारत दुनिया का सिरमौर होता।

उपसंहार

सरदार बल्लभ भाई पटेल सच्चे अर्थ में भारत राष्ट्र निर्माता थे, देश की स्वाधीनता के बाद देशी रियासतों को भारत राष्ट्र में विलय करने में सरदार पटेल की भूमिका उनके जीवन काल का सबसे प्रशंसनीय अध्याय माना जाता है। एक समेकित भारतीय गणराज्य के गठन के लिए रियासतों के एकीकरण के प्रति सरदार पटेल की प्रतिबद्धता और दिल्ली और पंजाब छोड़ने वाले शरणार्थियों के लिए उनके अथक राहत प्रयासों और भारत को आवंटित किये गए ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रांतों को एकीकृत करने के लिए उन्हें ''एकता के सूत्रधार'' की उपाधि मिली। विविधताओं से भरे राष्ट्र में उनके योगदान के प्रतीक के रूप में स्टेच्यु ऑफ यूनिटी के विचार ने जन्म लिया।

संदर्भ सूची

1. कमल एम.पी., सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली, 2003
2. पटेल आई. जे., आधुनिक भारत के निर्माता, सरदार वल्लभ भाई पटेल, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 2005
3. डॉ. जैन पुखराज, यूनीफाइड राजनीति विज्ञान (द्वितीय वर्ष) साहित्य पब्लिकेशन, आगरा, 2001
4. गौ अनीता, लौहपुरूष सरदार पटेल, राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली, 2015
5. सेनगुप्ता हिंडोल, अखण्ड भारत के शिल्पकार सरदार पटेल, प्रभात पेपरबैक्स, दिल्ली, 2019
6. चोपड़ा पी.एन., चोपड़ा प्रभा, सरदार पटेल, गॉधी नेहरू एवं सुभाष, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2018
7. डॉ. चोपड़ा प्रभा, भारत विभाजन, सरदार पटेल, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2018
8. स्वदेश
9. संदेश (गुजराती भाषा)
10. दिव्य भास्कर, गुजरात
11. दैनिक भास्कर
12. दैनिक जागरण
13. ब्रम्ह गंगा, त्रैमासिक
14. इंण्डिया टुडे
15. प्रतियोगिता दर्पण